E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 4(2): 167-170
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 04-09-2022
Accepted: 13-10-2022

आदर्श प्रसाद
विद्यार्थी, स्नातकोत्तर राजनीतिक विज्ञान विभाग, मांडर कॉलेज मांडर, रांची यूनिवर्सिटी, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
आदर्श प्रसाद
विद्यार्थी, स्नातकोत्तर राजनीतिक विज्ञान विभाग, मांडर कॉलेज मांडर, रांची यूनिवर्सिटी, झारखंड, भारत

झारखंड में बढ़ते पलायन का स्वरूप

आदर्श प्रसाद

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2022.v4.i2b.392

सारांश
पलायन एक बहुआयामी घटना है, जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव आर्थिक विकास, जनशक्ति, नियोजन, नगरीकरण और सामाजिक परिवर्तन पर पड़ता है यह शोध पत्र विशेष वर्ग एवं क्षेत्र के सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन के कारण श्रमिकों के पलायन प्रक्रिया को दर्शाता है। झारखंड में परिवर्तन की प्रकृति ने अस्थायी रणनीति के रूप में पलायन की प्रक्रिया को जन्म दिया है। यह शोध पत्र उन प्रक्रियाओं को दर्शाता है जिसमें गांव की सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता विभिन्न प्रवासन रणनीतियों में परिलक्षित होती है कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप कौशल की हानि, अवसरों की हानि और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है, जिसने विभिन्न समुदाय के श्रमिकों को अलग-अलग हद तक प्रभावित किया है।

कुटशब्द: आर्थिक, महामारी, शिक्षा, बेरोजगारी, श्रमिक, विवाह

प्रस्तावना
सामान्य शब्दो में, पलायन अपने मूल निवास स्थान से किसी दूसरे स्थान पर जाकर रहने की प्रक्रिया है। यह एक जटिल किन्तु आधारभूत सामाजिक प्रक्रिया है। एक स्थान से दुसरे स्थान पर जाकर रहना और अपनी मुलभूत आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयास पलायन है लेकिन यह पलायन की प्रवृत्ति कई रूपों में देखी जा सकती है। जैसे - एक गांव से दुसरा गांव, गांव से शहर, एक शहर से दूसरा शहर, एक देश से दुसरा देश या इसका विपरित क्रम । झारखण्ड में,' गाँव से शहरों' की पलायन की प्रवृति ज्यादा है। झारखंड में, रोजगार की अनिश्चिता, शिक्षा एवं स्वास्थ सुविधाए के अभाव में लोग राँची शहर या आस-पास के शहरों एवं दूसरे राज्य जैसे पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग, असम के चाय बागान, केरल का समुद्री मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में पलायन करते हैं। शिक्षा, नौकरी एवं मजदूरी के लिए दिल्ली बेंगलुरु हैदराबाद चेन्नई कोलकाता मुंबई जैसे शहरों में पलायन करते हैं। झारखण्ड के लोग न सिर्फ शहरी क्षेत्रों में पलायन करते है बल्कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में भी पलायन करते है। बढ़ते हुए शहरीकरण के परिगाम स्वरूप विकास कार्यों जैसे आवास, सड़क तथा पुल निमार्ग के रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए है और यही ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन का कारण बना है।

भारत में, 2020 में कोरोना महामारी विशेषरूप से फैलने लगी। यह बहुत तेजी से फैलने लगा एवं मृत्यु दर बढ़ गया। ज्यादातर लोग, बिमारी के डर से सुरक्षित रहने के लिए अपने गाँव की ओर वापस लोटे। इस काल में विदेशों एवं अन्य राज्य से झारखण्ड के वासी अपने गाँव मैं लाखों की संख्या में वापस आए। लगभग 27% आदिवासी आबादी के साथ, झारखंड का देश में सबसे ज्यादा प्रवासी प्रतिशत है (आर्थिक सर्वेक्षण, 2017 के अनुसार लगभग 5 मिलियन)। पश्चिम बंगाल राज्य और सूरत शहर में झारखंड से प्रवासी श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। अन्य शहर जो झारखंड से बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिकों को प्राप्त करते हैं, उनमें दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर और पुणे (2011 की जनगणना) शामिल हैं। लेकिन महामारी ने राज्य में पलायन के पैटर्न को उलट दिया, जिससे इसकी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था अचानक चरमरा गई। मार्च 2020 से अक्टूबर 2020 के बीच, लगभग 10 लाख प्रवासी श्रमिक झारखंड लौट आए। सभी जिलों में, गिरिडीह में सबसे अधिक 1.58 लाख प्रवासी लौटे, उसके बाद पलामू (1,09,438 कर्मचारी), गढ़वा (78,539), हजारीबाग (78,414), गोड्डा (69,752) और कोडरमा (42,932) का स्थान रहा। राज्य में व्यापक सामाजिक सुरक्षा के अभाव ने इन प्रवासियों को बेरोजगारी, गरीबी और सार्वजनिक उपयोगिता सेवाओं की कमी हुई। साथ ही, इनमें से कई कर्मचारियों ने प्रवास के दौरान बीमारी और उत्पीड़न का सामना किया।

झारखंड में भूमि अधिग्रहण और खनन के उद्देश्य से बड़ी संख्या में आदिवासी आबादी को विस्थापित करने के कारण, स्वतंत्रता के बाद से पलायन बढ़ा है। राज्य में पुश और पुल कारकों का संयोजन चक्रीय प्रवास (विशेष रूप से आदिवासी और आदिवासी महिलाएं) को प्रेरित करता है। सामाजिक कारक पलायन के निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आदिवासी लोगों में किसी अन्य सामाजिक समूह के लोगों की तुलना में मौसमी प्रवास की संभावना अधिक होती है। शोध में पाया गया कि भारतीय समाज के गरीब वर्गों में अस्थायी गतिशीलता अधिक है। पुरुष प्रवास, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में, गिरावट की प्रवृत्ति दर्शाता है। पुरुष प्रवास में गिरावट मनरेगा के सफल कार्यान्वयन का परिणाम होने की उम्मीद है या मौसमी प्रवास में वृद्धि के कारण हो सकती है। यह उम्मीद की जाती है कि ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा के तहत बनाए गए अल्पकालिक रोजगार के अवसर मौसमी और संकट से संबंधित प्रवास को कम करते हैं लेकिन यह ग्रामीण से शहरी प्रवाह को कम करने में सक्षम नहीं है। मौसमी पलायन एक विरोष मौसम में होता है। मौसमी प्रवासी विशिष्ट मौसम में रोजगार के लिए पलायन करते हैं। एक पलायन कृषि मौसम में होता है, जब फसलों को रोपने एवं कटाई कराने के लिए श्रम की आवश्यकता पूर्ति हेतु रोजगार के लिए किया जाता है। यह पलायन विशेष कर एक गाँव से दूसरे गाँव, या रिश्तेदारी के यहाँ होता है। इस वक्त लोग रोजगार की तलाश में मुख्यत शहर या दुसरे राज्य की ओर पलायन करते हैं। परंतु यह पलायन कुछ महीनो के लिए होता है, और कुछ महीनों काम करने के बाद धन एकत्र करके, कृषि मौसम में अपने मूल निवास स्थान पर लौट आते हैं। चूकि झारखाड 75% कृषि पर आधारित है।

झारखंड में गाँव से गाँव की ओर पलायन मुख्य रूप से देखने को मिलता है क्योंकि झारखण्ड में 75% आबादी कृषि पर निर्भर है। यह पलायन मुख्यत कृषि मौसम में देखने को मिलता है जब लोग रोपा रोपने के लिए, एक- दुसरे के खेतो में जाते हैं। वे लोग दूसरे गाँव में भी जाकर रोपा रोपने का कार्य करते हैं। मनरेगा के तहत्, तालाब का निमार्ग करने एवं अन्य मजदुरी के लिए भी एक गांव से दुसरे गांव जाते हैं। गाँव से गाँव पलायन में, महिलाओं की संख्या ज्यादा है । लगभग 30% महिलाएं शादी के कारण एक गांव से दुसरे गाँव वं पलायन करती है। कुछ महिलाएं कार्य करने के लिए भी एक गांव से दूसरे गांव पलायन करती हैं। इस प्रकार, गाँव से गाँव पलापन में महिलाओं की प्रतिशत बहुत ज्यादा है। भवन निमार्ग, सड़क निमार्ग, तालाब निमार्ग एवं व्यापार या अन्य उद्देश्य से भी लोग गांव से गाँव की ओर पलायन करते है।

गांव से शहर की ओर पलायन, गैर कृषि कार्य यानि कि गांव से शहर की ओर होता है। यह पलायन, अच्छे रोजगार की तलाश एवं नौकरी के लिए किया जाता है। इसका शिक्षा भी एक अन्य मुख्य कारण है। गाँव से शहर की ओर पलायन में पुरुष की संख्या ज्यादा होती

है। पुरुष दुसरे बड़े शहरो एवं नगर में जाकर अच्छी, नौकरी या रोजगार की तलाश करते हैं। ज्यादातर यह पलायन निम्न वर्ग द्वारा होता है। बड़े संयंत्र या फैक्टरी में यह लोग मजदूरी करते हैं। जिसमें कुछ महिलाए भी शामिल है। गांव से शहर की ओर पलायन में मध्य वर्ग की संख्या निम्न वर्ग की तुलना में कम है। यह पलायन उच्च शिक्षा एवं नौकरी के अद्देश्य से ज्यादा होता है।

शहर से शहर की ओर पलापन, मुख्य रूप से मध्य वर्ग में होता जो अपने सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए एक शहर से दूसरे शहर में पलायन करते है। यह पलायन शिक्षा के उद्देश्य से 18-24 वर्ष आयु में देखा एवं शिक्षा के उद्देश्य से किया जाता है। यह 21 से 28-30 आयु वर्ग में ज्यादा देखा गया है। हालांकि पुरुषों की संख्या महिलाओ से ज्यादा है परंतु इस पलायन में पुरुष एवं महिला का अनुपात में ज्यादा अंतर नहीं है। कभी - कभी लोग नौकरी के लिए एक शहर से दुसरे शहर जाते है और हमेशा के लिए वही बस जाते है। हालाकि यह पलायन की संख्या कम है। परंतु अब नगरों एवं महानगरों की संख्या में तेजी आ गई है। शहर से गाँव में पलायन, बाकी तीनों की तुलना में बहुत कम है। एवं इसका मुख्य कारण महंगाई में वृद्धि, प्रदुषण है दूसरा मुख्य कारण सरकारी क्षेत्र में या निजी क्षेत्र में नौकरी करना विशेषकर सरकारी क्षेत्र ।

कुछ पलायन बेहतर भौगोलिक क्षेत्र में बसने के लिए होता है तो कुछ पलायन, विशेष सामाजिक वर्ग द्वारा किया जाता है। आय वर्ग के अनुसार भी पलायन में भिन्नता पाई जाती है। कुछ लोग बेहतर भौगोलिक क्षेत्र जैसे समुद्री इलाकों या पहाड़ो में रहना पसंद करते है एवं सदा के लिए यहा पलायन कर जाते है। कुछ लोग नगरों या शहरों में रहना पसंद करते हैं एवं सदा के लिए वहाँ बस जाते है। झारखण्ड में शहरी क्षेत्रो से दुसरे महानगरों एवं विदेशों में उच्च वर्ग का पलायन ज्यादा देखने को मिलता है जो प्राय: उच्च एवं तकनीकि शिक्षा, व्यवसाय या नौकरी के लिए पलायन करते हैं। जबकि यही शहरों से दूसरे राज्य या विदेश की तरफ जनजातियों का पलायन कम देखने को मिला है। ग्रामीण क्षेत्रो से या दूसरे राज्य में जनजातियों का पलायन ज्यादा देखने को मिलता है जो आजीविका या रोजगार की तालाश में पलायन करते है। उच्च वर्ग के लोग भी शिक्षा एवं रोजगर के लिए ग्रामीण से शहर की ओर पलायन करते हैं किंतु इनकी संख्या तुलानात्मक कम है। शोध से पता चलता है कि निम्न एवं मध्य वर्ग के लोग ज्यादा पलायन करते हैं जिसमे निम्न वर्ग के लोग आजीविका एवं जीवन निर्वाह के लिए पलायन है। पलायन के लिए मजबुर मध्य वर्ग के लोग, शिबा एवं नौकरी के लिए प्रवास करते है इनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। उच्च वर्ग का पलायन बहुत कम होता है। ये लोग उच्च शिक्षा या व्यवसाय या निजी कारणों से पलायन करते है। किंतु, निम्न वर्ग का पलायन एक गांव से दूसरे गांव या शहर में होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह पता चलता है किर सबसे ज्यादा अध्ययन रोजगार एवं आजीविका के साधन के लिए किया जाता है। पलायन करने वालो में सबसे ज्यादा निम्न वर्ग के समुह आते है जो रोजगार या आजीविका के साधन की पूर्ति के लिए करते हैं। पलायन मध्यम वर्ग में भी देखा गया जो उच्च शिक्षा एवं अच्छी नौकरी के लिए शहर की ओर पलायन किए है। यह झारखण्ड में उच्च वर्ग में कम देखने को मिला है। उच्च वर्ग का पलायन बहुत कम हुआ है जो विशेषकर अच्छी शिक्षा एवं नौकरी के लिए महानगर या विदेश में पलायन किए है। पलायन से सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार एवं वृद्धि हुई। सिंचाई एवं उत्तम किस्म की बीज उपलब्ध कराने की जरूरत है जिसमें मौसमी पलायन में कमी लाया जा सके। कुछ बुनियादी सुविधाएं जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा, पानी बिजली उपलब्ध कराकर पलायन में कमी लाई जा सकती है।

महिलाओं को शिक्षा, शिक्षण संस्थाएं, लघु उद्योग, सिलाई केन्द्र उपलब्ध कराकर पलायन में कमी लाया जा सकता है। पलायन में कमी लाने के लिए, कौशल विकास योजना को बढ़ाते हुए, बुनाई, हथकरघा, कुटीर एवं लघु उद्योग, खाध्य उद्योग इत्यादि केन्द्र खोले जा सकते है। परंपरागत कृषि एवं जैविक कृषि लिए जागरूकता लाकर उन्हे आत्मनिर्भर किया जा सकता है। बिमारी या गंभीर हालात में मदद करने के लिए

योजना होनी चाहिए जिससे पलायन की कहीं भी हो उसे सुविया दी जा सरे। स्वरोजगार, आत्मनिर्भर बनाकर, प्रशिक्षण देकर, जागरूकता फैला कर वित्तीय सहायता करके पलापन में कमी लाई जा सकती है।

संदर्भ

1. रवि रंजन गोस्वामी "पलायन" प्रकाशक: राजमंगल पब्लिशर्स, 2019.
2. अंजलि शर्मा "पीड़ पलायन की: भारत बंद 2020" प्रकाशक नोशन प्रेस, 2020.
3. वैभव कुमार सक्सेना "पलायन ए स्टोरी आफ हिन्दी भाषी" प्रकाशक भारतीय साहित्य संग्रह, 2020.
4. मयंक पाण्डेय "पलायन पीड़ा प्रेरणा" प्रकाशक जेभीपी पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, 2020.
5. अनिल कार्की "पलायन से पहले" प्रकाशक समया साक्ष्या प्रकाशन, 2021.
6. https://hr.economictimes.indiatimes.com/news/industry/10-lakh-migrant-workers-returned-to-jharkhand-since-march-2020-government/87792076
7. https://www.thehindu.com/news/national/after-turning-their-backs-during-lockdown-cities-now-want-migrant-workers-back/article31927237.ece
8. https://shramshakti.tribal.gov.in/Docs/Policy%20Brief%20Report-Tribal%20Migration%20Research.pdf
9. https://www.mea.gov.in/emigration-clearance-system.htm
10. https://www.ies.gov.in/pdfs/Seminar-neerajkumar.pdf
11. https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/40447/download/44081/DROP_IN_ARTICLE-08.pdf